डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part – I
General & Subsidiary
Hindi

22-01-2022

विद्यापति का जीवन-परिचय

विद्यापति (सन् 1380 – 1460) का जन्म मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गाँव के एक ऐसे परिवार में हुआ जो विद्या और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। उनके जन्मकाल के संबंध में प्रमाणिक सूचना उपलब्ध नहीं है। उनके रचनाकाल और आश्रयदाता के राज्यकाल आधार पर उनके जन्म और मृत्यु वर्ष का अनुमान किया गया है। विद्यापति मिथिला नरेश राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार थे।

विद्यापति बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील व्यक्ति थे। साहित्य, संस्कृत, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, भूगोल आदि के प्रकांड पण्डित थे। उन्होंने संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) और मैथिली – तीन भाषाओं में रचनाएँ की। इसके अतिरिक्त उन्हें और भी कई भाषाओं-उपभाषाओं का ज्ञान था।

वे आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि कहे जा सकते हैं। उनकी कीर्तिलता और कीर्तिपताका जैसी रचनाओं पर दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य परम्परा का प्रभाव है तो उनकी पदावली के गीतों में भक्ति और शृंगार की गूंज

Scanned by CamScanner

है। विद्यापति की पदावली ही उनके यश का मुख्य आधार है। वे हिंदी साहित्य के मध्यकाल के पहले ऐसे कवि हैं जिनकी पदवली में जनभाषा में जनसंस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है।

राधा-कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण, स्तुति-पदों में विभिन्न देवी-देवताओं की भक्ति, प्रकृति संबंधी पदों में प्रकृति की मनोरम छवि रचनाकार के अपूर्व कौशल, प्रतिभा और कल्पनाशीलता के परिचायक हैं। उनके पदों में प्रेम और सौंदर्य की अनुभूति की जैसी निश्छल और प्रगाढ़ अभिव्यक्ति हुई है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं- कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, भू-परिक्रमा और पदावली।

Scanned by CamScanner